IJAER/ March-April 2023/Volume-12/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

राष्ट्रीय एकता में संगीत की भूमिका

डॉ0 शिखा मॅमगाई
एसोसिएट प्रोफेसर (संगीत)
पं0ल0मो0 शर्मा परिसर ऋषिकेश

सार

हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है जो समूचे विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। अलग – अलग संस्कृति और भाषाएं होते हुए भी हम सभी एक सूत्र में बंधे हुए हैं तथा राष्ट्र की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। संगठन ही सभी शक्तियों की जड़ है, एकता के बल पर ही अनेक राष्ट्रों का निर्माण हुआ है, प्रत्येक वर्ग में एकता के बिना देश कदापि उन्नति नहीं कर सकता। एकता में महान शक्ति है। एकता के बल पर बलवान शत्रु को भी पराजित किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः *राष्ट्रीय, संगीत*

परिचय

राष्ट्रीय एकता का मतलब ही होता है , राष्ट्र के सब घटकों में भिन्न – भिन्न विचारों और विभिन्न आस्थाओं के होते हुए भी आपसी प्रेम , एकता और भाईचारे का बना रहना। राष्ट्रीय एकता में केवल शारीरिक समीपता ही महत्वपूर्ण नहीं होती बल्कि उसमें मानसिक , बौद्धिक , वैचारिक और भावात्मक निकटता की समानता आवश्यक है।

' उतरंयत् समुद्रस्थ हिमोद्रश्चैन दक्षिण्य।

वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र एंतति।।'

अर्थात – वह देश जो समुद्र के उतर तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित है , भारत कहा जाता है। यहां की सन्तान भारतीय कहलाती है। भारत एक गणतन्त्र राष्ट्र है। यहाँ पर अनेक जातियाँ , सम्प्रदाय और धर्म के लोग रहते है। राष्ट्र की उत्पति ' राज ' धातु से हुई है। हिन्दी शब्दकोश में राष्ट्र शब्द का अर्थ एक राज्य में बसने वाला पूरा जनसमूह है। भारत में विभिन्न धर्मो , जातियों एवं विभिन्न संस्कृति और रीति – रिवाजों के लोग रहते है इसलिए भारत के अनुसार राष्ट्र की परिभाषा इस प्रकार हो सकती है – एक ही शासन के तले एक सुसंगठित एंव सुव्यवस्थित समाज , जो एकता एंव बन्धुत्व की भावना रखता हो , उसे राष्ट्र कहा जाता है। राष्ट्र उन व्यक्तियों से बनता है। जिनके भाव – स्वभाव , अनुभव व संस्कार एक समान है। डॉ . वासुदेव शरण अग्रवाल के मतानुसार भूमि , भूमि पर बसने वाले जन और जन की संस्कृति इन तीनों के सम्मिश्रण से राष्ट्र का निर्माण होता है।

' ध्रुवं ते राज वरूणो, ध्रुवं देवो वृहस्पतिः।

ध्रुव ते इन्द्रश्याग्निश्यं, राष्ट्र धारयतां ध्रुवं।।'

अर्थात – वरूण राष्ट्र को स्थिर करे अर्थात अच्छी जलवृष्टि हो , जिससे राष्ट्रीय धरा सब प्रकार से भरी पूरी हो। वृहस्पति राष्ट्र का ध्रुवीकरण करे अर्थात राष्ट्रीय चेतना बलवती हो और अग्निदेव राष्ट्र को अवितल रूप से धारण करे। राष्ट्र के प्रति भावना पुनीत है जो राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

राष्ट्रीय उत्थान या राष्ट्रीय संकट के समय जब समग्र राष्ट्र एक तन , एक मन होकर खड़ा हो जाता है तब राष्ट्रीय एकता का जीवंत रूप निखरता है। राष्ट्रीय एकता को देखने , परखने के लिए हम प्राचीन भारत में संगीत से विश्लेषण आरम्भ करते हैं तो देखते हैं कि भारतीय कवियों को श्री राम ने इतना आकृष्ट किया कि उन्होने अपनी – अपनी भाषाओं में अनेकों रचनाएं कर डाली। जहाँ तमिल भाषा में कंदिल , तेलगू में रंगनाथ और भास्कर , कन्नड़ में नागचन्द्र और मलयालम में एशुतच्छन ने रामकथाओं की रचना की। वहीं मराठी के मोरोपंत की रामायण , बंगला की कृतवास रामायण , असमिया के माधव कंदिल की रामायण , ओडिया के सरलदास और बलरामदास की रामायण घर – घर में गाई जाती है और पढ़ी जाती है। संत तुलसीदास का रामचरित मानस तो हिन्दी जनता वेद है। इसी प्रकार पूरे भारत में श्रीराम के ऊपर बने लोकगीत और सम्पूर्ण भारत को एकता सूत्र में बांधते है। जहां उत्तर मे श्रीराम बालक रूप में ' ठुमक चलत रामचन्द्र ' की ध्वनि की धीमी – धीमी गूंज होती है तो दक्षिण भारत में ' पुरूषोतम राम ' जन – मानस के हृदय में विराजित है।

राजस्थान में श्रीराम भगवान की होस्यिां गाई जाती है। श्रीराम ने जन्म तो अयोध्या में लिया परन्तु उनके जीवन चरित्र को पूरे भारतवर्ष में गाया जाता है। इस सब का कारण यह है कि श्रीराम ने जो आदर्श और मर्यादाएँ स्थापित की वे जन – जन की आत्मा में उनकी व्यक्तिगत वस्तु बनकर नहीं रहे। भारत राष्ट्र के आदर्श कहलाए।

भक्ति संगीत व सूफी मत द्वारा राष्ट्रीय एकताः –

14 वीं व 15 वीं शताब्दी के आस – पास भारत में मुसलमानों का आगमन हुआ। उस समय सूफियों के सहयोग से जो भी सामाजिक और धार्मिक परिवर्तन हुआ वह उच्चकोटि की साहित्यिक रचनाओं द्वारा ही सम्भव हो सका जो उस काल के संतों द्वारा रचा गया। जिसमें सांगीतिक पक्ष रखने वाले कवि भी हैं – मीरा , सूरदास , स्वामी हरिदास , तानसेन , कबीर , गुरूनानक , रहीम , नामदेव , चतुर्भुजदास , रैदास आदि ने संगीतमय काव्यों की रचना करके जन – जन तक पहुँचाया। संत काव्य के रचनाकार कवि होने के साथ – साथ संगीतन काव्यों की रचना करके जन – जन तक पहुँचाया। ईश्वर एक है चाहे उसके कितने भी नाम हो। भक्ति – संगीत में कोई उसे राम , रहीम , करीम , अल्लाह , कृष्ण , खुदा , ईश्वर , परब्रहम किसी भी नाम से पुकारे लेकिन भावना सभी की भक्ति द्वारा आत्मसमर्पण की होती है। राष्ट्रीय एकता का एक सजग उदाहरण सम्राट अकबर है। वे आत्मिक सुख – शांति और आनन्द के लिए ललित कलाओं में संगीत को महत्व देते थे। वे मीराबाई और स्वामी हरिदास का संगीत सुनने स्वयं उनके पास तक आते थे।

अनेकों सूफी संत और मुस्लिम संगीत का अध्ययन किया और संगीत में कई प्रयोग करने के साथ संगीत – साहित्य की रचना भी की। संत निजामुदीन औलिया , संगीत़ज्ञ अमीर खुसरो , फकीर उल्ला अनेकों संगीतज्ञ हुए जिन्होंने संगीत को अलग दिशा दी।

संत कबीर भारत के लोगों का ध्यान ऐसे विश्व धर्म की ओर दिलाना चाहते थे। जिनमें न कोई हिन्दु और ना मुसलमान हो , ना ब्रहमण ना शुद्र हो , ना छोटा ना बड़ा हो। उनका संदेश इस तरह है –

वही महादेव वही मोहम्मद – ब्रहम आदम कहिए।

को हिन्दु को तुरूक कहावे एक जद्यमी पर रहिए।।

दोनों सम्प्रदायों को एक जैसा महत्व दिया है और दोनो धर्म के अनुयायियों को वे बहुत प्रिय है।

हिन्दु कहो तो मैं नही , मुसलमान भी नहीं।

पाँच तत्व का पोटसा शैवी खेलै माहि।।

इस प्रकार अनेकों हिन्दु – मुसलमान संत है और जिनकी हिन्दु – मुस्लिम एकता में विशेष भूमिका है। जिनमें रामानन्द , चैतन्य महाप्रभु , कुंभनदास , रसखान , शेख फरीद , अमीर हसन सिज्जी , शेख बहाऊदीन बाजिम , गेसू दराज इत्यादि।

संगीत द्वारा एकता स्थापित करने में शास्त्रीय संगीत का भी अमूल्य योगदान है। राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में शास्त्रीय विभिन्न राग और ताल अपनी मुख्य भूमिका निभाते है। किसी भी धर्म या जाति से सम्बन्धित मनुष्य हो लेकिन सभी रागों व तालों का ऐसा सम्बन्ध है। हर कोई संगीत से मिलने वाले आनन्द में सरोबार हो जाता है। गुरू – शिष्य परम्परा में ही देखा जाए तो हमे वहां भी राष्ट्रीय एकता झलकती है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जो समाज में एकता पैदा करने में सक्षम है। कारण यह है कि धर्म , जाति , सम्प्रदाय , प्रान्त के बन्धन से परे है।

चैंदहवीं – पन्द्रहवी शताब्दी के आस – पास सम्पूर्ण भारत में भक्ति और आस्था के एक आन्दोलन ने संतो के एक नवीन वर्ग को जन्म दिया। इन संतों ने भारत को जोड़ने का कार्य किया। इनमें रामानन्द , नामदेव , कबीर , नानक , दादू व रविदास आदि के नाम प्रमुख है। भक्ति आन्दोलन के समय सांगीतिक पक्ष रखने वाले अन्य कवि भी हुए है। इनसे से प्रमुख हैं – मीरा , सूरदास , स्वामी हरिदास , परमानन्द दास , गोस्वामी , तुलसीदास , नन्ददास तथा नायक आदि। मीरा व सूरदास आदि ने संगीतमय काव्य लिखकार उन्हें जन – जन तक पहुंचाने का कार्य किया। इन संतो का मुख्य उद्देश्य बंधुत्व की भावना जागृत करना और देश की संस्कृति व साहित्य एवं अखण्डता को बनाए रखना था। भक्त प्रहलाद ने भक्ति के नौ अंग बताए है , उनमें से संगीत भी एक है। वेदों में भी भक्ति का निरूपण मिलता है। भगवान कहते है कि जो भक्ति रस अथवा भावना में डूबकर हंसता है , रोता है नामों का स्मरण करता है , भाव – विभोर होकर झूमने लगता है व सबकी लज्जा छोड़कर कूदने व नृत्य करने लगता है , ऐसा मेरा भक्त सम्पूर्ण जगत को पवित्र करता है।

सही अर्थो में वास्तविक साम्प्रदायिक एकता पूर्ण रूप से संगीत में ही दिखाई देती है। संगीत सम्मेलनों में प्रायः यह देखने में आता है कि मंच पर हिन्दू गायक , मुसलमान सारंगी वादक तथा बड़ाली तबला वादक इत्यादि आदि विभिन्न वर्ण , वर्ग , जाति , सम्प्रदाय और धर्म के संगीतज्ञ , स्वर और लय का एक साथ रसास्वादन करते है और उनके सामने बैठे सभी वर्ण के श्रोता एकता के बन्धन में बंध जाते है। भारतीय संगीत में गुरू – शिष्य परम्परागत बन्धनों की परवाह न करके आत्मीय एकता के प्रतीक बन जाते है। संगीत में एकता के ऐसे अनेक ज्वलन्त उदाहरण सदियों से ही विद्यमान है। हिन्दू गुरू के मुसलमान शिष्य और मुसलमान गुरू के हिन्दु शिष्य हुए है। पाकिस्तान एक दूसरा राष्ट्र बनकर भारतवर्ष से अलग हो हिन्दुस्तान के गायक इकट्ठे होकर एक दूसरे से मैत्रीपूर्ण भावना से मिलते है और एक मंच पर बैठकर एक साथ दोनों माँ वागीश्वरी की अराधना करते है।

देश में राष्ट्रीय एकता के लिए अनेक उपाय किए जा रहे है। आकाशवाणी और फिल्मों में संगीत के माध्यम से सभी वर्गो के लोगों को एक बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। एकता पर कई गीतों की रचना की गई है , जिन्हें आकाशवाणी तथा फिल्म के अच्छे – 2 कलाकारों द्वारा गवाकर रिकार्ड कर लिया गया है। मुहम्मद रफी द्वारा एकता पर गाया हुआ गीत ‘ आवाज दो हम एक है ’ भारतवर्ष के करोडों लोगो को एकता के सूत्र में पिरोता है। संगीत जनता के मन को भावनात्मक एकता की ओर ले जाने का अत्यन्त प्रभाव एवं मनोवैज्ञानिक माध्यम है। राष्ट्र गान को एक ही स्वर से गाने से जनता के मन पर गहराई से पड़ता है। वृन्दगान में भी एकता के गीतों की स्वर – रचना करके गाई जाए तो वह अधिक प्रभावी होगी। लोक संगीत युगों से जनता जर्नादन के रीति – रिवाजों व उनके संस्कारों को सजाए हुए अपनी छटा बिखेरता रहा है। लोकसंगीत ही है जो राष्ट्र को एकता के सूत्र मे बाँधे है क्योंकि प्रत्येक प्रान्त के व्यक्तियों के मनोभाव एक समान है। केवल भाषा का ही अन्तर है। इसी विभिन्नता में ही एकता है। अनेको ऐसी फिल्मी गीत है जो राष्ट्रीया एकता की भावना से ओतप्रोत है। जिसमें देश प्रेम की भावना है। जैसे मोहम्मद इकबाल जी का लिखा गीतः – ‘ सारे जहाँ से अच्छा , हिन्दोस्तान हमारा ’ अन्य गीतों में – ‘ मेरे देश की धरती , सोना उगले उगले हीरे मोती ’ कवि प्रदी प जो क्रान्तिकारी भी थे उनका लिखा गीत – ‘ हम लाए है तूफान से किश्ती निकाल के , इस देश को मेरे बच्चों रखना सम्भाल के ’ एक अन्य गीत – ‘ दे दी हमें आजादी , बिना खड्ग बिना ढाल , साबरमति के संत तूने कर दिया कमाल ’ ये सब गीत है जो राष्ट्र के प्रति आस्था , प्रेम

और देशभक्ति की भावना को उजागर करते है। दुरदर्शन द्वारा संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय भावना का संचार किया जा रहा है। ' मिले सूर मेरा तुम्हारा , तो सूर बने हमारा ' और ' हिन्द देश के निवासी सभी जन एक है ' आदि अनेक गीतों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत किया जा रहा है। विद्यालय एंव महाविद्यालय के द्वारा भी संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को अटूट किया जा रहा है। विद्यालय की दिनचर्या तो प्रार्थना से ही शुरू की जाती है। विद्यालयों में अनेकों सांगीतिक क्रार्यक्रमो के आयोजन से राष्ट्रीय भावना को बल मिला है। डॉ . सत्या भार्गव ने संगीत को पवित्र गंगा के समान माना है जो गंगोत्री से निकलकर अनेक यात्राएँ करती हुई बिना किसी स्वार्थ के आगे बढ़ती हुई चली जाती है। उसी प्रकार संगीत हिन्दू , मुस्लिम , सिक्ख , ईसाई सभी धर्मो व मतों को एक कर देती है। भारतवर्ष की फौज के जवानों को राष्ट्रीय एकता के गीत सिखलाएं जाए। जिसमें विभिन्न प्रान्तों एवं जाति के जवानों में भावनात्मक एकता बनी रहे और वे सभी एक होकर अपनी मातृभूमि की रक्षा करें। वास्तव में संगीत में ही समस्त राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने की महान शक्ति निहित है। जब संगीत के माध्यम से देवलोक और भू – लोक , आत्मा और परमात्मा , भक्त और भगवान के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है तो विभिन्न सम्प्रदाओं , जातियों , धर्मो और राष्ट्रों में मैत्रीपूर्ण एंव सद्भावना युक्त सम्बन्ध स्थापित करना निःसंदेह ही श्रमसाध्य है परन्तु नामुमकिन नहीं। अतः हम कह सकते है कि देश की एकता एंव अखण्डता को कायम रखने लिए संगीत एक सशक्त माध्यम है।

समाज से अभिप्राय

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज की सबसे छोटी एवं महत्त्वपूर्ण इकाई है। वह जो कुछ भी सीखता है अनुभव करता है या प्राप्त करता है, उसका आधार समाज ही होता है। मनुष्य समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग है या यह कह सकते हैं कि "समाज यदि जननी है तो व्यक्ति उसका बालक" ठीक जिस तरह से एक छोटा सा शिशु अपने माता-पिता के गुण-दोषों को संचित कर विकसित होता है उसी तरह मनुष्य समाज के गुण व दोषों को अपने जीवन में संचित कर अपना भविष्य बनाता है ।

संगीत कला एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है संगीत और समाज के संदर्भ में हमारे प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी के अनुसार "भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से संगीत मनुष्य के लिए साधना का विषय है भौतिक जीवन में संगीत मनोरंजन का उतना ही बड़ा साधन है जितना कि वह आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रेरणा का स्त्रोत है। आज ही नहीं सदियों से हमारे देश में संगीत और भगवत् भक्त का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है इसलिए मैं समझाता हूँ कि संगीत में जो प्रभाव और शक्ति है उसका प्रयोग मानव कल्याण के लिए होना चाहिए । साधारण मनोरंजन से लेकर आध्यात्मिक उड़ान तक सभी कुछ मानव कल्याण की परीधि में आता है।" इनके ये विचार प्रदर्शित करते हैं कि प्राचीन समय से ही संगीत की परम्परा समाज में धर्म, दर्शन, संस्कृति का आधार स्तर रही है।

संगीत के माध्यम से मनुष्य परमानंद को प्राप्त करता आया है और इस परमानंद में मनुष्य को शान्ति का अनुभव होता है तथा साथ ही साथ उसकी मानसिक शक्ति का भी पोषण होता है। संगीत कला मानव जीवन के हर रंग को अपने रंग में रंग लेती है। संगीत कला मनुष्य के हृदय की भाषा है जिस कारण संगीत का अन्य किसी भी कला की तुलना में शीघ्र एवं अधिक प्रभाव समाज पर पड़ता है। हर देश व प्रदेश के संगीत में भावनात्मक क्षमता को व्यक्त करने की कला विद्यमान रहती है। ऐसी क्षमता अन्य किसी कला में देखने को नहीं मिलती है।

यदि संगीत का आध्यात्मिक दृष्टि से अवलोकन किया जाए की संगीत की समाज में धार्मिक पक्ष में क्या भूमिका है तो यह बात स्पष्ट होती है कि संगीत मोक्ष प्राप्ति का सबसे सीधा, सरल व उत्तम साधन है।

निष्कर्ष

संगीत समाज के आंतरिक और बाह्य पक्ष को पोषित कर आंनदमय बनाता है। संगीत कला अपने आप में ऐसी विशेषताएँ लिये हुए है जिस से मनुष्य समाज के लिये भावनाओं से पूर्ण होकर मानवता के विकास में सहायक हो जाता है। इसलिए संगीत समाज में बहुत महत्त्वपर्ण भूमिका निभाता है और समाज के विकास के साथ ही साथ संगीत भी विकसित होता है। आज के बदलते सामाजिक

मूल्यों एवं परिवेश में संगीत की सामूहिकता के साथ मनुष्य अनुशासन में भी रहता है। यह अनुशासन संगीत के अपूर्व लय प्रदान करता है और यही लय स्वर से घुलमिलकर हृदयों में संवाद पैदा करती है। केवल जन-गण-मन का सामूहिक गान लाखों भारतीयों में देश के प्रति गर्व की भावना पैदा करता है। इसी प्रकार ऐसे कितने ही देश भक्ति के गीत है, उदाहरण के लिए हम होंगे कामयाब, मेरे वतन के लोगों, इतनी शक्ति हमें देना दाता आदि गीतों के द्वारा अर्थात् संगीत ही तो है जो व्यक्ति को सामाजिक बनाने का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली घटक है यह प्रामाणिक सत्य है। संगीत से मनोरंजन तो होता ही है लेकिन मनोरंजन से अधिक महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास अर्थात् समाज का विकास जिसमें संगीत के प्रचार-प्रसार के माध्यमों का प्रयोग द्वारा ही संभव हो सकता है। यह अनुभव किया जा चुका है। इसे प्रभावशाली माध्यम के रूप में व्यापकता के साथ अपनाया जा सकता है, जिसमें समाज का कल्याण हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ . सत्य भार्गव , राष्ट्रीय एकता मे संगीत की भूमिका , पृष्ठ – 2
2. डॉ . वासुदेव शरण अग्रवाल , पृथ्वी पुत्र – राष्ट्र का स्वरूप , पृष्ठ – 1
3. विष्णु पुराण , 2/3111
4. सम्पादक आचार्य रामचन्द्र वर्मा , वृहण् प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश , पृष्ठ – 780
5. डॉ . श्री एम . मोनियर विलियम , संस्कृत डिकश्नरी , पृष्ठ – 876
6. Fundamentals of Political Science and Organization, Page No. 44
7. श्रीमद् भागवत , पृष्ठ – 11, 14, 16, 31, 52